सांप्रदायिकता क्या है?

साम्प्रदायिकता एक प्रकार की विचारधारा के रूप में, वह है जो व्यक्तियों, समूहों या समुदायों के बीच एक पूर्वाग्रह पर अंतर की पहचान करती है जो पूरी तरह से धर्म, विश्वास, जातीयता आदि पर निर्भर है। एक शब्द के रूप में, सांप्रदायिकता को एक स्पष्ट संबंध के रूप में परिभाषित किया जा सकता है एक व्यक्ति और उनका समुदाय। भारत जैसे विशाल समाज में, सांप्रदायिक झड़पें दुखद लेकिन अपरिहार्य हैं।

इस लेख में जानें की सांप्रदायिकता क्या हैं, इसकी परिभाषा उद्देश्य कारण दुष्परिणाम सुझाव, साम्प्रदायिक का अर्थ और पढें communalism in Hindi | साथ में PDF डाउनलोड करें|

सांप्रदायिकता क्या है | What is Communalism in Hindi?

साम्प्रदायिकता का अर्थ है अपने समुदाय के प्रति एक मजबूत लगाव, यह किसी का अपना धर्म, क्षेत्र या भाषा हो सकता है। यह समुदायों के बीच हितों के अंतर को बढ़ावा देता है जो समुदायों के बीच शत्रुता के प्रति असंतोष पैदा कर सकता है। भारत में सांप्रदायिकता एक विशिष्ट रूप में पायी जाती है । भारत में, यह आम तौर पर किसी की धार्मिक पहचान के लिए मजबूत और यहां तक कि आक्रामक लगाव से जुड़ा होता है जो अन्य धर्मों के खिलाफ उत्पन्न भावनाओं को प्रेरित करता है।

यह भी पढ़े	
UPPSC Syllabus	BPSC Syllabus
Secularism in Hindi	Pratham Vishwa Yudh
UPPSC सिलेबस इन हिंदी	BPSC सिलेबस इन हिंदी

सांप्रदायिकता का प्रभाव, Effect of Communalism

- यह समुदाय-विशिष्ट हितों की धारणा उत्पन्न करता है।
- यह विभिन्न समुदायों के बीच हितों के अंतर पर बहस करके बहिष्करणवादी दृष्टिकोण का प्रचार करता है जो संगत या असंगत हो सकता है।
- सांप्रदायिकता एक समुदाय को दूसरे समुदाय के खिलाफ लामबंद करती है।
- एक समुदाय दूसरे समुदायों की कीमत पर बढ़ने और सामाजिक-आर्थिक लाभ हासिल करने की कोशिश करता है।
- चरम सांप्रदायिकता अक्सर अन्य धर्मों को अनिवार्य रूप से खत्म करने का उपदेश देती है।

सांप्रदायिकता के प्रकार | Types of Communalism in Hindi

सांप्रदायिकता एक विचारधारा है और इसे तीन व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है जो इस प्रकार हैं:

1. राजनीतिक सांप्रदायिकता: राजनीति में, नेता अपने हितों और लाभों के लिए विभाजन के विचार को अप्रत्यक्ष रूप से बढ़ावा दे सकते हैं।
2. आर्थिक साम्प्रदायिकता: जब विभिन्न समूहों के लोगों के आर्थिक हितों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा किया जाता है, तो इससे समाज में विभाजनकारी दरारें पैदा होती हैं।
3. सामाजिक साम्प्रदायिकता: सामाजिक मान्यताएँ कुछ समुदायों से संबंधित व्यक्तियों के बीच प्रतिद्वंद्विता पैदा करती हैं, जो हमारे बनाम उनके की भावनाओं को बढ़ाती हैं।

सांप्रदायिकता के चरण | Stages of Communalism in Hindi

सम्प्रदायिकता की विचारधारा के चरण निम्न हैं:

1. सांप्रदायिक राष्ट्रवाद- चूंकि एक समूह या वर्ग एक विशेष धर्म से संबंधित है, इसलिए उनके धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक हित समान हैं।
2. उदार सांप्रदायिकता- चूँकि दो समुदायों के धार्मिक हित अलग-अलग होते हैं, इसलिए उनके धर्मनिरपेक्ष हित भी भिन्न होते हैं।
3. चरम सांप्रदायिकता- न केवल विभिन्न धर्मों के धर्मनिरपेक्ष हित भिन्न हैं, वे असंगत भी हैं और दोनों समुदाय एक साथ नहीं रह सकते।

भारतीय साम्प्रदायिकता के चरण | Stages of Indian Communalism

भारत विविधताओं का देश है। और यह भाषाई, जातीय, सांस्कृतिक और नस्लीय विविधता के लिए जाना जाता है। भारत में साम्प्रदायिकता एक आधुनिक परिघटना है, जो भारत की विविधता में एकता के लिए खतरा बन गई है। इसके विभिन्न चरण हैं:-

सांप्रदायिक इतिहास लेखन

औपनिवेशिक शक्तियों ने धार्मिक इतिहास के मिथक का प्रचार किया। उन्होंने प्राचीन भारत को एक हिंदू काल के रूप में और मध्ययुगीन भारत को एक मुस्लिम काल के रूप में धार्मिक आधार पर गहन संघर्ष के इतिहास के साथ चित्रित किया। शासक वर्गों के संघर्ष को विकृत कर दिया गया और धार्मिक संघर्षों की अतिरंजित धारणाओं को सामने रखा गया।

सामाजिक-आर्थिक विकास

भारतीय जनता के बीच, हिंदू समुदाय पश्चिमी शिक्षा सीखने में तेज था। इससे मुसलमानों की तुलना में हिंदू समुदाय में पेशेवर और पूंजीपति वर्ग का उदय हुआ। परिणाम यह हुआ कि कुछ सरकारी नौकरियों पर कुलीन हिंदुओं ने कब्जा कर लिया। आर्थिक पिछड़ेपन और बेरोजगारी का शोषण अंग्रेजों द्वारा उन समुदायों के बीच एक दरार पैदा करने के लिए किया गया था जो सीमित अवसरों के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे थे। यह स्थिति बहुत जल्दी सांप्रदायिक हो गई।

सामाजिक-आर्थिक सुधार आंदोलनों के दुष्प्रभाव

हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों में सुधार आंदोलन पुनरुत्थानवादी प्रवृत्तियों से प्रदूषित हो गए थे। मुसलमानों में वहाबी आंदोलन और हिंदुओं के बीच शुद्धि आंदोलन ने अपने पुनरुत्थानवादी दृष्टिकोण के साथ संबंधित धर्मों की प्राचीन महिमा पर जोर दिया।

उग्रवादी राष्ट्रवादी आंदोलन

उग्र राष्ट्रवादियों ने धार्मिक तत्वों के इर्द-गिर्द जनता को लामबंद करने की कोशिश की। लोकमान्य तिलक द्वारा गणपति और शिवाजी उत्सवों को एक धार्मिक लामबंदी के रूप में गलत समझा गया था, हालांकि इसका मकसद राष्ट्रवादी लामबंदी था। क्रांतिकारियों द्वारा गंगा में डुबकी लगाने और देवी-देवताओं की पूजा जैसी गतिविधियों ने मुसलमानों को उत्साहित नहीं किया।

अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति

पहले हिंदू अभिजात वर्ग और फिर मुस्लिम अभिजात वर्ग को रणनीतिक रूप से खुश करके अंग्रेजों ने चालाकी से फूट डालो और राज करो की नीति निभाई। कांग्रेस के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने के लिए सरकार ने मुस्लिम बुद्धिजीवियों का इस्तेमाल किया।

1905 में बंगाल का विभाजन, मुस्लिम लीग बनाने और बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन, 1909 का अलग निर्वाचक मंडल और सांप्रदायिक पुरस्कार समुदायों के बीच दुश्मनी पैदा करने और स्वतंत्रता संग्राम को कमजोर करने के लिए निर्देशित किया गया था।

धार्मिक समुदायों द्वारा सांप्रदायिक प्रतिक्रियाएं

समुदायों ने इस धर्म की भावना के साथ आक्रामकता के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की।

हिंदू महासभा और मुस्लिम लीग जैसे चरमपंथी संगठनों के गठन ने दो राष्ट्र सिद्धांत को धार्मिक आधार पर आक्रामक रूप से प्रचारित करने से दुश्मनी को मजबूत किया।

कांग्रेस की गैर-भूमिका

- जब अल्पसंख्यक प्रतिक्रिया की बात आती है तो कांग्रेस हमेशा अतिरिक्त सतर्क रहती थी।
- 1889 में, कांग्रेस ने अल्पसंख्यक भावनाओं को आहत करने वाले किसी भी मुद्दे को नहीं उठाने का फैसला किया।
- 1916 का लखनऊ समझौता लंबे समय में बहुत हानिकारक साबित हुआ।
- कांग्रेस अंग्रेजों पर दबाव बनाने के लिए पर्याप्त राष्ट्रीय चेतना का निर्माण करने में सफल रही लेकिन मुसलमानों को राष्ट्र में एकीकृत करने में यह काफी हद तक विफल रही।
- यह 1946 के चुनावों में सबसे अधिक स्पष्ट था जब मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए आरक्षित लगभग सभी सीटों पर जीत हासिल की।

सांप्रदायिक हिंसा की प्रमुख घटनाएं | Incidents of Communal Violence in Hindi

भारत में सांप्रदायिकता का एक लंबा और दुखद इतिहास खून से लथपथ है। इन्हें नीचे सूचीबद्ध किया गया है:

- भारत और पाकिस्तान विभाजन: भारत के आधुनिक इतिहास में मानव जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी और नुकसान 1947 में भारत और पाकिस्तान का विभाजन है, जो 1949 तक जारी रहा।
- जबलपुर दंगे: 1961 में जबलपुर दंगे हुए जो मुस्लिम और हिंदू बीड़ी निर्माताओं के बीच हुई आर्थिक प्रतिस्पर्धा के कारण हुए। जबलपुर दंगों ने चीजों को गति प्रदान करने के साथ, 1960 के दशक में सांप्रदायिक आधार पर बहुत रक्तपात देखा। 1964 में राउरकेला, जमशेदपुर में 1965 और रांची में 1967 के दंगे पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) के हिंदू शरणार्थियों के क्षेत्र में हुए।
- अहमदाबाद दंगे: 1969 के सितंबर में अहमदाबाद में हुए दंगों ने सांप्रदायिकता के नकारात्मक प्रभाव को चित्रित करते हुए एक बड़ी दरार पैदा कर दी। कहा जाता है कि इसका कारण जनसंघ पार्टी से है, जिसने इंदिरा गांधी द्वारा वामपंथी जोर का विरोध करने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया था। प्रस्ताव का उद्देश्य मुसलमानों का

भारतीयकरण करना था।

- वर्ली संघर्ष: मुंबई राज्य के वर्ली इलाके में टेनमेंट बस्ती में पुलिस द्वारा दलित पैंथर्स का तितर-बितर अप्रैल 1974 में शिवसेना नामक एक राजनीतिक दल के गुस्से के कारण हिंसक हो गया।
- सिख विरोधी दंगे: इंदिरा गांधी की हत्या के बाद 1984 के सिख विरोधी दंगे भड़क उठे। इसने उत्तर प्रदेश, दिल्ली और अन्य में लगभग 4000 सिखों का नरसंहार देखा।
- बॉम्बे-भिवंडी दंगे: हिंदुत्व बैंडबाजे में शिवसेना के नेता शामिल थे, जिन्होंने बॉम्बे-भिवंडी दंगों के रूप में हिंसा को उकसाया था।
- बाबरी मस्जिद विवाद: 1985 में शाह बानो के विवाद और बाबरी मस्जिद-राम मंदिर विवाद ने तब से अधिकांश राजनीतिक प्रवचन को एक सांप्रदायिक प्रवचन की ओर पुनर्निर्देशित किया है। वे तब से सांप्रदायिक तनाव के प्रचार और प्रचार के लिए महत्वपूर्ण उपकरण बन गए हैं, खासकर अस्सी के दशक में।
- कश्मीरी पंडित पलायन: विद्रोह के खतरे के बाद वर्ष 1992 में कश्मीर घाटी में लगभग 1,00,000 कश्मीरी पंडितों को उनके घरों से निकाल दिया गया था।
- बाबरी मस्जिद विध्वंस: दिसंबर 1992 में कई दक्षिणपंथी दलों द्वारा बाबरी मस्जिद के विध्वंस के साथ सांप्रदायिक शीर्ष का पता लगाया गया। इसके बाद दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद, सूरत, कानपुर आदि शहरों में भयानक दंगे हुए।
- गुजरात दंगे: 2002 गुजरात दंगों की शुरुआत गोधरा में एक ट्रेन में आग लगने से हुई थी।
- वडोदरा दंगे: मई 2006 में सूफी संत सैयद चिश्ती रशीदुद्दीन की दरगाह को हटाने के राज्य नगर पालिका के आदेश के कारण वडोदरा राज्य में दंगे भड़क उठे।
- 2012 के असम दंगे: वर्ष 2012 ने असम को हिंसा के आतंक के तहत देखा। दरार स्वदेशी बोडो भाषी समुदाय और असम के मुसलमानों के बीच थी। तनाव तब और बढ़ गया जब बोडो भाषी समुदाय ने मुस्लिम समुदाय पर अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों के कारण वृद्धि का आरोप लगाया।

साम्प्रदायिकता को समाप्त करने के लिए क्या कर सकते हैं? | How to Stop Communalism?

हाल के दिनों में सांप्रदायिक तनाव बढ़ने का गवाह रहा है। विशेष रूप से मीडिया चैनलों और सोशल मीडिया पर सनसनी की शुरुआत के साथ, सुधार की आवश्यकता स्पष्ट रूप से स्पष्ट हो जाती है।

- प्रशासन की सभी शाखाओं में अल्पसंख्यकों और समुदाय के कमजोर वर्गों के प्रतिनिधित्व में वृद्धि करने की आवश्यकता है।
  सांप्रदायिकता को कम करने के लिए वर्तमान आपराधिक न्याय प्रणाली में सुधार की प्रबल आवश्यकता है जो पीड़ितों को त्वरित परीक्षण और मुआवजे की गारंटी देता है।
- प्रशासन के लिए दिशानिर्देशों को संहिताबद्ध किया जाना है। साम्प्रदायिक दंगों से निपटने और उन्हें बिगड़ने से रोकने के लिए बलों के बीच सुग्राहीकरण करने की आवश्यकता है।
- लोगों को गलत सूचना और दुष्प्रचार के शिकार होने से बचाने वाले वैज्ञानिक स्वभाव के विकास के साथ-साथ भाईचारे, शांति, अहिंसा, मानवतावाद और धर्मनिरपेक्षता की भावनाओं को बढ़ावा देने के लिए मूल्य-उन्मुख शिक्षा सिखाई जानी चाहिए।
- सांप्रदायिक सद्भाव और जागरूकता पैदा करने के लिए समर्थन परियोजनाओं को चलाने वाले गैर सरकारी संगठनों और नागरिक समाजों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- अल्पसंख्यक कल्याण योजनाओं में अद्यतनीकरण की अत्यंत आवश्यकता है ताकि अल्पसंख्यकों को प्रदान करने में वर्तमान प्रशासनिक पैटर्न की चुनौतियों और कमियों को दूर किया जा सके।
- सांप्रदायिक सद्भाव के लिए राष्ट्रीय फाउंडेशन को सांप्रदायिक शांति को बढ़ावा देने के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।
- हम जिस सांप्रदायिक हिंसा को देख रहे हैं, उसे रोकने के लिए और अधिक सक्रिय कानून की जरूरत है। सांप्रदायिक हिंसा (रोकथाम, नियंत्रण और पीड़ितों का पुनर्वास) विधेयक, 2005 को जल्द ही अधिनियमित किया जाना चाहिए।
- मीडिया और लोकप्रिय कलाएं भारत की समकालिक संस्कृति के चित्रण के माध्यम से सामाजिक सद्भाव में योगदान दे सकती हैं।
- सांप्रदायिक मुद्दों से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं का अध्ययन किया जाना चाहिए और उन्हें

अपनाया जाना चाहिए। जैसे विभिन्न जातियों के बीच सद्भाव को बढ़ावा देने और हांगकांग में जातीय अल्पसंख्यकों के एकीकरण की सुविधा के लिए "रेस रिलेशन यूनिट", मलेशिया की जातीय संबंध निगरानी प्रणाली।

- राष्ट्रीय एकता परिषद को फिर से मजबूत किया जाना चाहिए।

Related Links:

- Panchayati Raj System in Hindi
- Human Development Index in Hindi
- Climate Change in Hindi
- Bharat Sarkar Adhiniyam 1935 in Hindi

BYJU'S EXAM PREP